P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-5* ISSUE-5* August - 2020
E: ISSN NO.: 2455-0817 Remarking An Analisation

खजुराहो : पत्थरों में छलकता शिल्प सौन्दर्य

Khajuraho: Splendor of Beauty in Stones

Paper Submission: 11/08/2020, Date of Acceptance: 22/08/2020, Date of Publication: 23/08/2020

पंकज कुमार
शोध छात्र,
इतिहास विभाग,
शहीद मंगल पाण्डे
राजकीय महिला स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, माधवपुरम, मेरठ,
उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

भारत धर्म प्रधान देश है। यहाँ प्राचीनकाल से ही देवताओं की मूर्तिपूजा की आस्था का एक प्रतीक रही है। इसके साथ ही किसी की स्मृति को जीवित रखने तथा कलाकार द्वारा अपने भावों को आकार देने के लिए भी मूर्ति (मूरतें) निर्माण होती रही है। यहाँ मंदिर एवं मूर्तियाँ चंदेल राजाओं की समृद्धि, आभिजात्य और जीवन के अबूझ पहलुओं को सबके सामने लाने तथा संभोग से समाधि की ओर ले जाने वाली भारतीय संस्कृति के प्रतीक हैं। कामकेलि के विलक्षण रूप इन खूबसूरत मूर्तियों के माध्यम से यहां कुछ मंदिरों की दीवारों पर उकेरे गए हैं। यहां कुल 22 मंदिर हैं, जिनमें ज्यादातर की दीवारों पर श्रृंगारिक मूर्तियां बनी हुई हैं। अलबत्ता कुछ दीवारों पर युद्ध को तैयार घुड़सवार, हथियारबंद योद्धाओं की कतारें, अपने राजदरबार में दरबारियों से घिरे राजा, नृत्यांगनाओं की कमनीय मुद्रा में मूर्तियां भी है।

India is a religious country. Since ancient times, idolatry of gods has been a symbol of faith. Along with this, idols (idols) have been constructed to keep one's memory alive and to shape their expressions by the artist. The temples and idols here symbolize the prosperity, nobility and unrivaled aspects of life of the Chandela kings in front of everyone and the Indian culture that leads from sexual intercourse to samadhi. The unique forms of Kamakeli are carved through these beautiful sculptures on the walls of some temples. There are a total of 22 temples, most of which have ornamental sculptures on their walls. However, on some walls there are also statues of war-mounted horsemen, rows of armed warriors, kings surrounded by courtiers in their court, dancers in a diminutive posture.

मुख्य शब्द : खजुराहो, मन्दिर, स्थापत्य कला, मूर्तिकला, शिल्पकला, सौन्दर्य एवं समाज आदि।
Khajuraho, Temple, Architecture, Sculpture, Sculpture, Beauty and Society etc.

प्रस्तावना

खजुराहो वह स्थान है जिसने भारत को विश्व में कला के क्षेत्र में उच्च स्थान पर स्थापित किया है। खजुराहो वह नाम है जिसने भारतीय कला को प्राचीन समय में नए आयाम दिए हैं। और जिसने आज के मूर्तिकारों को यह सोचने पर बाध्य कर दिया है कि उनकी कृतियाँ खजुराहो की मूर्तिकला के सम्मुख तुच्छ है। यह खजुराहो की स्वप्नवत कला ही है जो विश्व भर के पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करती है और उनके अन्तरंग को झकझोर देती हैं और पर्यटक उसकी भूरि–भूरि प्रंशसा किए बिना नहीं रह पाता। जर्मन कवि **गेटे** के शब्दों में कला का अंतिम और सर्वोच्च ध्येय सौन्दर्य है। यहाँ शैव मत के मन्दिरों की संख्या सबसे अधिक है। इसके अतिरिक्त वैष्णव तथा जैन सम्प्रदायों के भी मन्दिर यहाँ विद्यमान है। चन्देलकालीन कारीगरों ने अपनी अद्भुत कला का परिचय देते हुए उन संदेशों को मन्दिरों की दीवारों एवं छतों पर मूर्तियों के रूप में इस प्रकार दर्शाया कि वे चिरंजीवी शाश्वत कला एक संदेश बन गए यहाँ की स्थापत्य कला एवं मूर्तियाँ उत्तम तो हैं। ही साथ ही साथ तत्कालीन समाज की मनोवृत्ति को भी सफलतापूर्वक दर्शाता है खजुराहो की कला उच्चता के उस शिखर पर है जिसके आगे सभी युगों की कलाएं बौनी होकर रह गयी है।

शोध का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र निम्नलिखित उद्देश्यों पर आधारित है

1. मानव ने किस उद्देश्य या भावना से वशीभूत होकर मूर्ति निर्माण के विषय में सोचा होगा। साथ ही उपलब्ध तथ्यों की नवीन व्याख्या की है।

2. सृष्टि में जो कुछ अव्यक्त है, अनकहा है, कलाकार उसे तलाशकर और तराशकर कैसे एक मोहक अभिव्यक्ति देता है ।
3. शोध पत्र के माध्यम से शोधार्थी ने इस कला की प्रमुख विशेषताओं को उजागर करने का प्रयास किया है। इन मूर्तियों के वर्तमान स्वरूप का विश्लेषण तथा भविष्य की संभावनाओं को तलाशना। ताकि यह क्षेत्र विश्व मानचित्र में अपना विशिष्ट स्थान बना सकें।

आकड़ो के स्त्रोत एवं शोध पद्धति

प्रस्तुत शोध पत्र हेतु शोधार्थी की पद्धति ऐतिहासिक, समालोचनात्मक तथा व्याख्यात्मक रही है शोधार्थी ने अध्ययन तथा स्थलीय सर्वेक्षण द्वारा संकलित प्राथमिक सामग्री तथा मूर्तियों से संबंधित विभिन्न दृश्यावली के विश्लेषण पर आधारित है। इसमें द्वितीयक सामग्री का उपयोग प्राथमिक सामग्री के पूरक रूप में तथ्यों के स्पष्टीकरण हेतु तुलनात्मक विवेचन के निमित्त किया गया है। ज्ञात तथ्यों तथा इस विषय पर उपलब्ध पूर्ववर्ती लेखकों के विचारों का विश्लेषण और मूल्यांकन करने का प्रयास किया गया हैं।

शोध की परिकल्पना

प्रस्तावित शोध पत्र में यह परिकल्पना की गयी है कि खजुराहो मन्दिरों में मूर्तियों को प्रमुख रूप से चित्रण कर जनमानस में धार्मिक, कल्पनात्मक चरित्र चित्रण द्वारा समाज में उनके विभिन्न गूढ़ रहस्यों व संदेशों को प्रस्तुत करना है। यहाँ उत्कीर्ण मूर्तियाँ और कलाकृतियों में शायद ही कोई ऐसा अंश हो जहाँ कलात्मक पूर्णता के चिन्ह्र न दिखते हो बल्कि सांस्कृतिक धरोहर को भी इसके माध्यम से जाना जा सकता हैं। इस शोध लेख से मूर्तिकला की मूल्यवत्ता को स्पष्ट करने में सहायता मिल सकेगी। इससे संबंधी विषय के पूर्वाग्रहों के निदान और निर्वारण में सहायता मिल सकती हैं।

साहित्यावलोकन

खजुराहो : ''पत्थरों में छलकता शिल्प सौन्दर्य'' पर किए गए शोध का उद्देश्य तथा शोध पद्धति का विवरण प्रस्तुत करते हुए इस विषय पर लिखे गए साहित्य का अवलोकन, विश्लेषण और मूल्यांकन किया गया है। जैसे –

डॉ रामाश्रय अवस्थी की पुस्तक ''खजुराहो की देव प्रतिमाएँ'' प्रथम संस्करण 1967 में खजुराहो का इतिहास तथा वहाँ के मन्दिरों का संक्षिप्त विवरण दिया गया है। साथ ही खजुराहो की वास्तु और मूर्तिकलाओं की धुँधली रूपरेखा पर भी आधुनिक गवेषणाओं के आधार पर अच्छा प्रकाश डाला है।

डॉ कृष्णदत्त वाजपेयी की पुस्तक ''भारतीय वास्तुकला का इतिहास'' प्रथम संस्करण 1972 में कंदराओं और पर्णशालाओं से लेकर विशाल देवालयों और महालयों एवं दुर्गों के विकास की कहानी ऐतिहासिक क्रमबद्धता के साथ प्रांजल और आकर्षक भाषा में प्रस्तुत किया है।

राय कृष्णदास की पुस्तक ''भारतीय मूर्तिकला'' प्रथम संस्करण 1996 में भारतीय मूर्तिकला की आलोचना, तात्त्विक व्याख्या, प्रारंभिक सिद्धांत, सौंदर्य–प्रेक्षणा तथा उसके इतिवृत्त एवं उससे संबंध रखने वाले राजनीतिक इतिहास आदि का एक विलक्षणा गड्डमड्ड हैं।

डॉ शरद सिंह की पुस्तक ''खजुराहो की मूर्तिकला के सौन्दर्यात्मक तत्त्व'' प्रथम संस्करण 2006 में प्रतिमाओं का सौन्दर्य शास्त्रीय विवेचन साथ ही खजुराहो की मूर्तिकला का स्वरूप, खजुराहो मूर्तिशिल्प का अन्य समकालीन मूर्ति शिल्प से तुलनात्मक आकलन को स्पष्ट किया हैं।

डॉ नीलकण्ठ पुरूषोत्तम जोशी की पुस्तक ''प्राचीन भारतीय मूर्ति विज्ञान'' प्रथम संस्करण 2014 में कला साहित्य एवं रेखा चित्रों की सहायता से विषय को अत्यन्त उपयोगी सिद्ध करने का प्रयास किया है। साथ ही पुरातात्त्विक अभिलेखों, पुराण, बौद्ध, जैन ग्रन्थों पर शोध कार्य करते हुए मूर्तियों की शास्त्रीयता एवं प्रमाणिकता को दर्शाया गया हैं।

दृष्टि पब्लिकेशन्स की पुस्तक ''कला एवं संस्कृति एक समग्र अवलोकन'' द्वितीय संस्करण 2019 में संस्कृति, स्थापत्य कला एवं मूर्तिकला का विस्तार से वर्णन किया है। साथ ही खजुराहो मूर्तिशिल्प की कलागत विशेषताओं के साथ–साथ काम–भावना के लक्षण भी स्पष्ट किए हैं। भारत की धार्मिक–दार्शनिक, शैक्षिणक–वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिकीय विकास का वर्णन हैं।

शोधार्थी यह भी स्पष्ट करता है कि शोधार्थी से पहले इस शीर्षक पर जो भी कार्य किए गए है वह उसके संज्ञान में नहीं हैं।

प्रकृति की अज्ञात शक्तियों और घटनाओं को जानने की इन इंसानी कोशिशों ने सबसे पहले मिथकों को जन्म दिया। ये मिथक ही कला और साहित्य में अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम बने क्योंकि मिथक इंसान के दिल में उत्पन्न होते हैं, उसके शरीर की उस उर्वर मिट्टी से जो विभिन्न प्रतिक्रियाओं और प्रभावों को ग्रहण करती हैं। मिथक इतने असरदार बन गये कि उन्होंने इंसानों की जिंदगी को ही ढालना शुरू किया। धीरे–धीरे अमूर्त भाव प्रतीकात्मक भाषा में व्यक्त किये जाने लगे। भारतीय कला पर इसका प्रभाव ज्यादा ही पड़ा। प्राचीन काल से ही दैविक और अर्द्धदैविक शक्तियों को दर्शाने के लिए प्रतीक गढ़े जाने लगे।

यह कहना मुश्किल है कि निराकार और अनंत ईश्वर कब और कैसे साकार और नित्य रूप में बदल गये। मूर्तियां बनने लगीं और मंदिरों में रखी जाने लगीं। ये इंसान की शक्ल से मिलती–जुलती भी थीं और बिल्कुल प्रतीकात्मक भी, जैसे लिंग या पत्थर। मूर्तियों को दैविक शक्ति का अंश माना जाने लगा। इन मूर्तियों को बनाने की तकनीकी जानकारी के लिए शिल्पशास्त्र की रचना हुई।

कहा गया कि मूर्तियां दैविक शक्तियों की सच्चाई को व्यक्त करती हैं। ये ध्यान में सहायक होती हैं। इनके साथ यंत्र (ज्यामितिक चित्रों में ऊर्जा के नक्शे) और मंत्र (स्वरात्मक सूत्र) होते हैं। मंत्रों का खास तरह से पाठ किया जाता है। इनका शाब्दिक नहीं, ध्वन्यात्मक प्रभाव होता है क्योंकि इनके पाठ करने का विशेष तरीका होता है। मंदिरों की नींव में यंत्र रखे जाते हैं। यंत्र ज्यामितीय चित्र होते हैं और उनमें ब्रह्मांड की सक्रिय ऊर्जा रहती है। पूजा में पहले तो उस देवता की प्राण प्रतिष्ठा होती हैं। फिर इस तरह से पूजा शुरू होती है–**अच्युताय नमः,**

P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-5* ISSUE-5* August - 2020
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

अनंताय नमः। (हे अविनाशी और अनंत ईश्वर आपको मेरा प्रणाम) मूर्तिपूजा का पहला संकेत ईसा पूर्व पांचवी शताब्दी में **पाणिनी** की रचनाओं में मिलता है।

देवी–देवताओं की मूर्तियां हमारे यहां ईसा पूर्व से ही निर्मित, प्रतिष्ठित की जाती रही हैं। विष्णु, शिव, पार्वती, सूर्य, लक्ष्मी, दुर्गा, काली, वाराही की मूर्तियां तो रामायण व महाभारत काल से ही प्रचलित है। इनसे भी पूर्व सनातन धर्मावलंबी अथवा वैदिक लोग पत्थर, प्रकृति, वृक्ष इत्यादि की पूजा करते थे। कालांतर में उन्हीं लोगों द्वारा अमूर्त पत्थरों पर रूप गढ़कर मूर्तियों के निर्माण का सिलसिला शुरू हुआ होगा। मूर्तिकरण की यह चाहत धार्मिक आस्था के साथ–साथ कला की अभिव्यक्ति का सुख भी देती होगी। अब यह कहना मुश्किल है कि सबसे पहली मूर्ति कला के सुख के लिए गढ़ी गई अथवा आस्था के तौर पर काल्पनिक देवता को मूर्त रूप देने के लिए। लेकिन हिंदू मानस में श्रद्धा का भाव अलौकिक पात्रों की मूर्तियों के प्रति हो रहा तथा इन्हीं अलौकिक पात्रों के विभिन्न रूपों का मूर्तिकरण हमारे यहां की स्थापत्य तथा मूर्तिकला का भी अभिन्न अंग रहा है।

मूर्तिकला को सार्थकता प्रदान करने वाला विशिष्ट कला–शिल्प होता है। वह मूर्ति को सुसंगत एवं सुष्ठ रूप में गढ़ता तो है ही, वह अपनी रचना को वांछित भाव भंगिमा भी प्रदान करता है। अंग्रेजी के प्रसिद्ध लेखक **रस्किन** ने ठीक ही लिखा है कि ''शिल्पी पत्थर या मिट्टी में से मूर्ति उत्पन्न नहीं करता है। वह तो उसमें है ही–जो छिपी हुई है, सिर्फ उसे प्रकट करना उसका काम है'' चन्देलकाल मूर्ति कला का चरम उत्कर्ष–काल था। उस काल में निर्मित इन मूर्तियों के अवलोकन व अन्वेषण से नारी के चिरन्तन सौंदर्य के बोध और भारतीय परम्परा में मूर्तिकला और नृत्य के बीच निकट संबंध का संकेत मिलता है। शिल्प–विधान द्वारा अंकित भावों की सजीवता ही मूर्ति में प्राण–प्रतिष्ठा करके उसको जीवंतता प्रदान करती है। इसके अभाव, में मूर्ति निर्जीव एवं निष्प्राण होकर उपेक्षाणीय हो जाती है। देव–मन्दिरों में प्रतिष्ठित देव–विग्रहों की सजीवता एवं प्राणवत्ता उनके कलात्मक सौन्दर्य पर निर्भर रहती है। ''कला का काम सुन्दर को सजीव बनाना है''।

मूर्तिकला भी कला की प्राचीनतम कला विधाओं में से एक हैं। मूर्तिकला के अन्तर्गत मिट्टी, पत्थर, धातु–काष्ठ, टेराकोटा या अन्य किसी पदार्थ से विविध प्रकार की त्रिविमीय आकृतियाँ निर्मित की जाती हैं। खजुराहो की मूर्तिकला अत्यधिक सुपरिभाषित एवं सुसंगत सभ्यता की द्योतक हैं। यह अपनी विशिष्टता, सुन्दरता, कला–कौशल तथा प्रतीकात्मकता के लिए विश्व प्रसिद्ध हैं। मूर्ति निर्माण अपने आप में एक पूरा विज्ञान है, जहां एक खास तरह की आकृतियां एक खास तरह के पदार्थ या तत्वों से मिल कर बनाई जाती हैं और उन्हें कुछ खास तरीके से ऊर्जावान किया जाता है। अलग–अलग मूर्तियां या प्रतिमाएं अलग–अलग तरीके से बनती हैं और उनमें पूरी तरह से अलग संभावनाएं जगाने के लिए उनमें कुछ खास जगहों पर चक्रों को स्थापित किया जाता है। जिसके जरिए आप ऊर्जा को एक खास तरीके से रूपांतरीत करते हैं, ताकि आपके जीवन स्तर की गुणवत्ता बढ़ सके।

भारतवर्ष का स्वर्णयुग गुप्तकाल के बाद उत्तर व उत्तर–मध्य भारत में चन्देलकालीन राजनीतिक तथा सांस्कृतिक दृष्टिकोंण से उन्नति की पराकाष्ठा का युग था चन्देल काल में खासकर मूर्त शिल्प कला के क्षेत्र में तो अभूतपूर्व उन्नति हुई मूर्तिकला और स्थापत्य कला निर्माण के इस युग में कितनी ही कलाकृतियों का प्रणयन किया गया। जो इतिहास की बेशकीमती धरोहर के रूप में आज

भी मौजूद है। **माईकेल एंजलो** ने कहा ''प्रत्येक पाषाण में एक मूर्ति छिपी होती है। शिल्पी का कार्य उसे अनावृत करना होता है।'' यह कथन जितना सुविख्यात है, उतना अर्थपूर्ण भी है। यह मन्दिर अपनी कलागत विशेषताओं के कारण और एक से एक सुन्दर अप्सरा मूर्तियों के कारण कलामर्मज्ञों के द्वारा खजुराहो के श्रेष्ठ मन्दिर स्वीकार किये गये हैं। खजुराहो के परवर्ती मन्दिरों तथा उनकी मूर्तियों में कला का अत्यन्त निखरा हुआ रूप मिलता हैं। इनका निर्माण भारतीय शिल्प–शास्त्र के विधानों के अनुरूप हुआ हैं। प्रतिमा विज्ञान की दृष्टि से इनका बड़ा महत्त्व हैं।

यह युग वास्तव में स्थापत्य एवं अन्य कलाओं के पल्लवित एवं पुष्पित होने का काल था। यदि इस अवधि को भारतीय स्थापत्य कला का स्वर्णयुग कहा जाए तो इसमें कोई अतयुक्ति नहीं होगी। क्योंकि देवी–देवताओं की अलौकिक छवियों के बीच लौकिक श्रृंगार भी अपना स्थान और आकार खोजने लगा। कहते है कि इन्हीं सुन्दर कल्पनाओं और भावनाओं को लेकर भारत में मूर्तिकला का उद्‌भव हुआ। कला मर्मज्ञों एवं विद्ववजनों का मानना है कि भाव–भिन्नता के कारण मूर्तियों का निर्माण भी विविध रूपों में होता है, यथा–सात्विक, राजसिक और तामसिक। पुनः इन भावों के अनुरूप ही उनका रंगादि भेद भी हो जाता है। उल्लेखनीय है कि अग्निपुराण, मत्स्यपुराण, भविष्यपुराण, विष्णु धर्मोत्तर पुराण, प्रतिमामण्डन, शिल्परत्नम आदि ग्रंथों में मूर्ति निर्माण की विधियों, रंगों एवं उनके महात्म्यों का विषद् वर्णन किया गया है। यह सर्वज्ञात है कि विद्या, संपत्ति, और शक्ति को रूपायित करने में भारत के कुशल कलाकारों ने अपनी क्षमता का अद्‌भुत परिचय दिया है।

प्राचीन काल से ही भारत के सांस्कृतिक विकास के इतिहास में खजुराहो का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। खजुराहो तथा इसके आसपास के क्षेत्र में शुंगकाल तथा गुप्तकाल के अनेक निर्माण सम्बन्धी अवशेष प्राप्त हुये हैं। गुप्तकाल से स्थापत्य कला एवं मूर्तिकला के क्षेत्र में प्रारम्भ हुये क्रमिक विकास के सोपानों की अगली सीढ़ी के रूप में खजुराहो ने मूर्तिकला के उत्कृष्ट काल में प्रवेश किया था। शताब्दियों के प्रयास से कला की तकनीकों को संपूर्णता मिली, निश्चित शैलियों का विकास हुआ और सूक्ष्मता से सौंदर्य के आदर्शों का सृजन हुआ। अब अंधेरे में भटकने जैसी कोई बात नहीं थी, अब कोई प्रयोग नहीं हो रहे थे। कला के वास्तविक लक्ष्यों और अनिवार्य सिद्धांतों को बुद्धिमानी से पूर्णरूपेण समझकर एक उच्च विकसित सौंदर्यबोध और कुशल हाथों द्वारा कौशलपूर्ण निष्पादन कर ऐसी अद्वितीय कृतियों को जन्म दिया गया, जो उत्तरवर्ती युगों के भारतीय कलाकारों के लिये आदर्श और निर्भीकतापूर्ण थी। चन्देलकालीन प्रतिमाएँ आने वाले समय के लिये भारतीय कला का मात्र मॉडल ही नहीं रही, बल्कि इन्होंने सुदूर–पूर्व के उपनिवेशों में आदर्श के रूप में भी काम किया।

खजुराहो मध्यप्रदेश के छतरपुर जिले में स्थित हैं। यहाँ चन्देल राजाओं के काल में 9वीं से 12वीं शताब्दी तक के अनेक सुन्दर तथा भव्य मन्दिरों का निर्माण किया गया। इन मन्दिरों का निर्माण ग्रेनाइट तथा लाल बलुआ पत्थरों से किया गया। इनकी भीतरी तथा बाहरी दीवारों पर बहुसंख्यक मूर्तियों को उत्कीर्ण किया गया हैं। यहाँ के मन्दिरों में देवी–देवताओं की मूर्तियों के साथ–साथ अनेक दिग्पालों, गणों, अप्सराओं, पशु–पक्षियों आदि की भी बहुसंख्यक मूर्तियाँ मिलती हैं।

अप्सराओं या सुन्दर स्त्रियों की मूर्तियों ने यहाँ की कला को अमर बना दिया हैं। ये मन्दिर की जंघाओं, रथिकाओं, स्तम्भों, दीवारों आदि पर उत्कीर्ण हैं। इन्हें अनेक मुद्राओं और हावभावों में प्रदर्शित किया गया हैं। कहीं वे देवताओं के पार्श्व में तथा कहीं हाथों में दर्पण, कलश, पद्य आदि लिए हुए दिखाई पड़ती हैं। कहीं वे नृत्यरत है तो कहीं अलस नायिका, कहीं पैरों से काँटा निकालती मुद्रा में है। माता और पुत्र सहित बहुसंख्यक मिथुन आकृतियाँ उत्कीर्ण कर बनाई गई हैं, जो अत्यन्त कलापूर्ण एवं आकर्षक हैं।

प्राचीन भारत में शिल्पकला के तीन प्रमुख विद्यालय हुए– गांधार, मथुरा एवं अमरावती। जिनमें तीन विशेष प्रकार की शैलियों का विकास हुआ, यह तीनों शैलियाँ अपने–अपने दृष्टिकोण से उत्कृष्ट थी तथा भारतीय शिल्पकला में इन सभी को श्रेष्ठ स्थान प्राप्त है। खजुराहो के मन्दिर एवं मूर्तियाँ मथुरा विद्यालय के शिल्पकारों ने निर्मित किये थे और उस विद्यालय की विशेषताओं को दिखलाते है खजुराहो में यह शैली अपनी उन्नति के सर्वोच्च शिखर पर पहुंची है

खजुराहो में उपलब्ध बहुसंख्यक मूर्तियों को हम विविध वर्गों में विभाजित कर सकते हैं। पहले वर्ग में देव–प्रतिमाएँ आती है, जिनका निर्माण पूजा के लिए हुआ। ये मूर्तियाँ प्रायः चारों ओर से कोर कर बनायी गयी है और उन्हें मन्दिरों के गर्भगृहों अथवा अन्य विशेष स्थलों पर प्रतिष्ठित किया गया। अधिकांश देव–प्रतिमाएँ सीधी खड़ी हुई या समभंग रूप में है और कई बहुत विशाल हैं।

दूसरे वर्ग के अन्तर्गत परिवार या पार्श्व–देवता आते हैं। ये अधिकतर बाहरी दीवारों पर या आलों पर बने हैं। इनमें विविध प्रकार के दिक्पालों, गणों, जैन शासन देवताओं आदि की मूर्तियाँ हैं। हम देवों से छोटे गणों, गन्धर्वों एवं विद्याधरों एवं किन्नरों इत्यादि की प्रतिमायें मान सकते हैं। पार्श्वनाथ, आदिनाथ, दूल्हादेव एवं चतुर्भुज मन्दिर की बाह्य दीवारों पर सबसे ऊपर इनका बड़ा सुन्दर चित्रण हुआ है। स्तम्भों के ऊपर मन्दिरों की छतों को उठाये हुये से रूप में गणों का बहुत सुन्दर चित्रण लगभग सभी मन्दिरों में हुआ हैं।

P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-5* ISSUE-5* August - 2020
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

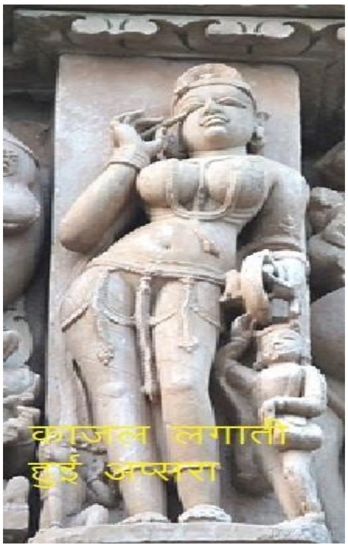
काजल लगाती हुई अप्सरा

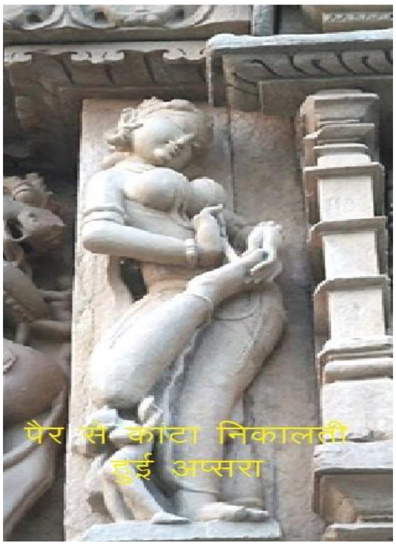
पैर से काँटा निकालती हुई अप्सरा

अप्सरा (चित्रगुप्त मन्दिर)

तीसरे वर्ग में विशेषतः वे प्रतिमाएँ है जिन्हें 'सुर–सुन्दरी' या 'अप्सरा' कहते है। इनकी संख्या बहुत अधिक हैं। इन्हें अनेक आकर्षक भाव–भंगिमाओं में चित्रित किया गया है। कहीं वे स्नान के बाद बालों से पानी निचोड़ रही है, कहीं पैर में आलता लगा रही है और कहीं बच्चों या पशु–पक्षियों से खिलवाड़ कर रहीं हैं। उन्हें कहीं वीणा–यंत्र आदि वाद्य–यंत्र बजाते हुए या गेंद खेलते हुए प्रदर्शित किया गया है। इन प्रतिमाओं में उन अनेक नायिकाओं के मूर्त रूप देखने को मिलते है जिनका दर्शन भारतीय साहित्य में हैं। इनमें कामकला से संबंधित प्रतिमाओं को माना जा सकता हैं। इनमें मैथुन के दृश्य एवं कामसूत्र में वर्णित विभिन्न प्रकार के आलिंगनों का चित्रण उल्लेखनीय हैं। सभी जैन मन्दिरों तथा वामन, चतुर्भुज मन्दिर को छोड़कर अन्य सभी मन्दिरों में इस तरह का चित्रण हुआ हैं। चौथे वर्ग के अन्तर्गत घरेलू जीवन सम्बन्धी दृश्य रखे जा सकते हैं। ये दृश्य तत्कालीन जीवन की सुन्दर झांकी प्रस्तुत करते है। इन मूर्तियों के इर्द–गिर्द सजावट के लिए भी बहुत–सी मूर्तियां बना कर कुछ न कुछ दर्शाया गया है।

पाँचवे वर्ग में पशु पक्षियों की प्रतिमाएँ आती हैं। पशुओं में सबसे अधिक शार्दूल मिलता है, जिसे प्रायः सीगों वाले शेर के रूप में चित्रित किया गया है। एवं कीर्तिमुखों का भी चित्रण लगभग सभी मन्दिरों में हुआ हैं। खजुराहो के कलाकारों को अलंकरण के रूप में इस पशु का अंकन बहुत प्रिय था। अन्य अनेक पशु–पक्षियों का चित्रण भी बड़े प्रभावोत्पादक ढंग से किया गया है। कुछ दृश्य सैनिक अभियानों तथा यात्रोत्सवों के है।

इनके अलावा बड़े मन्दिरों में छोटी–छोटी मूर्तियों की दो–दो लाइनें भी दिखलाई गई है (लक्ष्मण मन्दिर के चबूतरे के नीचे की ओर एक बड़ी लाइन भी इस तरह का चित्रण करती हैं) यह प्रतिमायें उतनी गहरी नहीं है एवं उस युग के जीवन की झांकियों को दिखलाती हैं। इन्हे विस्तार से देखने पर इस युग के जन जीवन को जाना जा सकता है। एक ऐसी संस्कृति की झलक हमें इनमें दिखलाई देती है जो कि भारतवर्ष में इस्लाम धर्म के आने के पहले थी। इनमें शिकार, युद्ध, नृत्य, संगीत, विवाह, राज दरबार के दृश्य गुरू शिष्यों का चित्रण। सामूहिक संभोग के दृश्य इत्यादि उल्लेखनीय है।

कन्दरिया महादेव मन्दिर की बाहरी दीवारों पर अनेक मिथुन मूर्तियों का अंकन अत्यंत कलात्मकता से किया गया है। जो कि आंतरिक प्रेम और सुंदरता को प्रदर्शित करती है। इसके माध्यम से समाज में स्थापित गृहस्थ जीवन की अंतरगंता को प्रदर्शित करने का प्रयत्न किया गया है। इनमें आशंका को बहुत ही बारीक एवं अछूते ढंग से दिखाया गया है। मूर्तियां ऐसी हैं, जैसे बिना बोले सब कुछ कह रही हों। इन्हें देख कर ऐसी अनुभूति होती है कि हम अतीत में नहीं अपितु वर्तमान में घूम रहें हों। अन्दर भगवान शिव के जीवन की वे तमाम घटनांए मूर्तियों के जरिए दिखाई गई हैं, जिनका हमारे पुराणों में वर्णन है। यह गुफा क्योंकि भगवान शिव को समर्पित है इसलिए यहां पर आपको भगवान शिव के अनेक रूप मिलेंगे। भगवान शिव को कैलाश पर्वत पर माता पार्वती जी के साथ बैठे दिखाया गया हैं। उनको अथाह शक्ति का स्त्रोत दिखाया गया है। जब आज वहां पहुंचते हैं तो आप एकदम मानव जगत को छोड़ कर जैसे देव लोक में पहुंच गए हों ऐसा प्रतीत होता है। हर पल आप भगवान शिव की विभिन्न मुद्राओं में प्रतिमाओं को देख कर उनमें खो जाएंगे।

मंदिर की बाहरी दीवारों पर तीन समानांतर क्रम में विभिन्न प्रतिमाओं को उकेरा गया हैं जिनमें से प्रमुख रूप से शिव की विविध लीलाओं का प्रदर्शन है। विष्णु के अवतारों व देवी देवताओं की विभिन्न प्रतिमाओं के साथ तृतीय स्तर पर नायिकाओं, नर्तकों, वादकों, योद्धाओं, मिथुनरत युगलों और काम कलाओं को प्रदर्शित करते नायक–नायिकओं का भी अंकन बड़े कलात्मक ढंग से किया गया है, जिनके माध्यम से समाज में स्थापित गृहस्थ जीवन को अभिव्यक्त किया गया है। नृत्य करते हुए स्त्री पुरुषों को देखकर यह आभास होता है कि 10वीं–11वीं शताब्दी में भी इस क्षेत्र में नृत्यकला में लोग रुचि रखते थे। इनके अतिरिक्त पशुओं के भी कुछ अंकन देखने को

मिलते है जिनमें प्रमुख रूप से गज और शार्दुल (सिंह) की प्रतिमाएं हैं। मंदिर के परिसर में विभिन्न देवी देवताओं की प्रतिमाएं सती स्तंभ और शिलालेख संग्रहित किए गए।

आकाश मंडल में गंधर्वों को गाते–नाचते हुए पत्थरों में चित्रित किया गया है। भगवान की नृत्यावस्था की मूर्ति, जिसे नटराज का मुद्रा कहते हैं, भगवान के अंग हिलते हुए से प्रतीत होते हैं। जब आप इन तमाम मूर्तियों को ध्यान से देखते हैं तो आपको भगवान शिव पूरी तरह नृत्य करते हुए प्रतीत होते हैं।

खजुराहो (मध्य प्रदेश) समेत उत्तरी भारत के अन्य अनेक भागों में अनेक सौन्दर्यपूर्ण कृतियां विद्यमान है, हालांकि इनमें से बहुत कम ऐसी हैं जो उड़ीसा की मूर्तिकला की उत्कृष्टता के समकक्ष रखी जाने योग्य हों। खजुराहो के मन्दिरों पर मूर्तिकला की अनेक विभूतियां अपनी लाक्षणिक विशिष्टताओं के साथ उत्कीर्ण हैं। उल्लेखनीय है कि खजराहो के मन्दिर देवताओं की आकृतियों तथा आश्चर्यजनक सौन्दर्य एवं सुकुमारता से युक्त प्रेमी युगलों से भरे हुए हैं। इनकी विविध भाव–भंगिमांए, नर्तन मुद्राओं में कोरी लचीली देह यष्टियां असाधारण एवं नयनाभिराम है। जानकारों की राय में, हैं तो वे अलंकरण मात्र, लेकिन उनमें से प्रत्येक देवमूर्ति होने की क्षमता रखती है। कलात्मक योग्यता की दृष्टि से इन मूर्तियों का दमखम, उनका नग्न विलास, सम्पूर्ण आत्मसमर्पण उनकी काया को अनुपम शक्ति और अद्भुत लावण्य प्रदान करते हैं।

अप्रैल, 2015 में भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को उनकी कनाडा यात्रा के दौरान वहाँ के तत्कालीन प्रधानमंत्री स्टीफन हार्पर ने भारत के खजुराहो से चोरी हो गई एक मूर्ति को वापस लौटाया। यह मूर्ति 900 वर्ष पुरानी हैं। इस मूर्ति में एक सुन्दर स्त्री के कन्धे पर एक तोता बैठा हैं। इसे पैरट लेडी के नाम से जाना जाता है। इस प्रकार की श्रृंगार प्रधान मूर्तियाँ खजुराहो में बहुतायत में उत्कीर्ण की गई थी।

खजुराहो में मूर्तिकला का विकास अनेक रूपों में हुआ, जैसे– मृण्मूर्तिकला, धातु मूर्तिकला, पाषाण मूर्तिकला आदि। एक ओर जहाँ यवन मानव शरीर की दैहिक सुंदरता को दर्शाने में सर्वोपरि थे, वहीं भारतीय अपने अध्यात्म को मूर्तियों में ढालने का प्रयास करने में अद्वितीय थे। यह वह अध्यात्म था, जिसमें लोगों के उच्च आदर्श और मान्यताएँ निहित थी। जब कलाकार प्रकृति देवी यक्षिणी या जनन की प्रतीक नारी या दिव्य सुंदरी की परिकल्पना करता है तो उसकी भौंहें धनुष की चाप, आँखे वक्र मछली, होंठ कमल की पंखुड़ी, बाँहें रमणीय लता और पैर केले के वृक्ष की भाँति शुंडाकार बनाता है। कहने का तात्पर्य यह है कि भारतीय कला में आध्यात्मिकता और सौंदर्यबोध दोनों का मिश्रित रूप देखने को मिलता है।

निष्कर्ष

संक्षेप में अगर कहा जाए तो खजुराहो का वास्तुशिल्प सौंदर्य अनंत सागर की तरह है जिसमें जितने गहरे उतरते जाएंगे, कुछ न कुछ नया ढूंढ़ने की संभावना बनी रहेगी। बहुत कुछ देखने पर भी बहुत कुछ रह जाने का आभास बना रहता है। सच कहें तो ये सभी चन्देलकालीन कृतियाँ और स्थल हम भारतीयों के लिए बहुमूल्य, विशिष्ट व अमूल्य उपहार है। जिन्हें सहेज–सँवार कर रखना प्रत्येक नागरिक का परम कर्तव्य है। क्योंकि भूकम्प, विद्युत–कोप, आँधियाँ और सबसे बढ़कर देखरेख के अभाव के कारण मूर्तियाँ भग्नावस्था को प्राप्त हो रहा है। सरकार के लापरवाही ने भारतीय स्थापत्य कला के इस, अद्भुत नमूने को नष्ट करने में काफी योगदान दिया है, दीवारों पर खुदी हुई मूर्तियाँ शिल्पकला के उत्कृष्ट नमूने है। मन्दिर का कलेवर काम–शास्त्रीय मूर्तियों से भरा पड़ा है। सम्भवतः ऐसा दुष्टात्माओं से मंदिर की रक्षा के लिए शिल्पियों ने किया होगा। आज जरूरत है तो हमारे सांस्कृतिक विरासत की कहानी कहते प्राचीन स्मारकों, मंदिरों, मूर्तियों आदि के उचित रखरखाव की ताकि आने वाली पीढ़ी हमारे गौरवपूर्ण अतीत की कम से कम झलक तो पा सके।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *अवस्थी, डॉ रामाश्रय : खजुराहो की देव प्रतिमाएँ, ओरिएण्टल पब्लिशिंग हाउस, आगरा, प्रथम संस्करण 1967*
2. *वाजपेयी, डॉ कृष्णदत्त : भारतीय वास्तुकला का इतिहास, हिन्दी समिति, लखनऊ, प्रथम संस्करण 1972*
3. *राय, कृष्णदास : भारतीय मूर्तिकला, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, प्रथम संस्करण 1996*
4. *सिंह, डॉ शरद : खजुराहो की मूर्तिकला के सौन्दर्यात्मक तत्त्व, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, प्रथम संस्करण 2006*
5. *जोशी, डॉ नीलकण्ठ पुरूषोत्तम : प्राचीन भारतीय मूर्ति विज्ञान, बिहार–राष्ट्रभाषा–परिषद्, पटना, प्रथम संस्करण 2014*
6. *कला एवं संस्कृति एक समग्र अवलोकन, दृष्टि पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण 2019*
7. *अग्रवाल, कन्हैयालाल : खजुराहो, दि मैकमिलन कंपनी आफ इंडिया लिमिटेड, नई दिल्ली, 1980*
8. *जैन, नीरज : खजुराहों के जैन मन्दिर, सतना, 1971*
9. *Kremrisch, Stella **:** The Art of India Traditions of India Sculpture Painting and Architecture, Phaidon Publishers, London, 1954*
10. *Desai, Devangana **:** Khajuraho, Oxford University Press, New Delhi, 2010*